بسم اللہ والحمد للہ والصلوۃ والسلام علی رسول اللہ و علی ازواجہ و الہ واصحابہ

......اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ○ [الرعد: آیت 28]

तर्जुमा: खूब समझ लो! اللہ ﷻ के ज़िक्र में ही दिलों का सुकून है.

सहीह हदीस: जो बंदा अपने रब का ज़िक्र करता है वो गोया की जिंदा की मिसल है और जो बंदा अपने रब का ज़िक्र नहीं करता वो मुर्दा [بُخاری: 6407، مُسلم: 1823] की मिसल है.

सहीह हदीसी कुदसी: मैं अपने बन्दे ही के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है और उसके होंठ ज़िक्र की वजह से हरकत [سُنن ابن ماجہ: 3792] करते है.

सुबह और शाम के सुन्नत अज़कार

मुर्शिदी कामिल, इमाम उल अंबियां ﷺ की सहीह अहादीस से

तमाम अहादीस के नम्बर्स उलेमाएं हरमैन और बैरुत के इंटरनेशनल नंबरिंग के मुताबिक है

...وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ كَثِيۡرًا وَّسَبِّحۡ بِالۡعَشِىِّ وَالۡاِبۡكَارِ○ [آلِ عمران: 41]

तर्जुमा: और अपने रब का ज़िक्र बहुत ज्यादा करो, और सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयां करो .

सहीह हदीस: एक शक्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ इस्लाम के अहकाम व आमाल तो बहुत ज्यादा है ,मुझे कोई बात ऐसी बताएं कि मैं उसे लाज़मी पकढ़ लू, आप ﷺ ने फ़रमाया : तेरी ज़बान पर [جامع ترمذی: 3375] हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र जारी रहे.

① **आयातुल कुर्सी** (سُورۃُالبقرۃ : 255) पढ़ने वाला शैतान और जिन्नात से महफ़ूज़ हो जाता है और उसकी हिफाज़त के लिये एक मुहाफ़िज़ मुक़र्रर कर दिया जाता है (1मर्तबा सुबह और शाम) **मुअव्विज़ात**
[بُخاری : 2311 ، السُنن الکُبریٰ لِلنسائی : 8017 ، المُستدرك لِلحاکم : 2064]

② **मुअव्विज़ात** की तिलावत (जिन्नात और जादू के ख़िलाफ़) हर शै से काफी हो जाती है
[جامع ترمذی :3575 ، سُنن ابی داؤد : 5082](तीनों 3 मर्तबा सुबह और शाम)

۞ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۞ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۞ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

नोट: रात 3 बार पढ़ कर हथेलियों पर फूंकना और जिस्म पर दम्म करना सुन्नत है [بُخاری :5017]

③ ये कलिमात पढ़ने वाले को 4 गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और तमाम दिन रात में हर ख़तरनाक चीज़ और शैतान के ख़िलाफ़ उसका बचाव हो जाता है (10 मर्तबा सुबह और शाम)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ
[مُسلم : 6844 ، سُنن ابی داؤد : 5077]

﴿नहीं है कोई माबूद मगर अल्लाह, वह अकेला हैं, नहीं है कोई शरीक़ उसका, उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़े है, और वह हर शै पर पूरी क़ुदरत रखता है﴾

नोट: हर रोज़ 100 बार पढ़ना अफ्ज़लतरीन अमल है
[بُخاری :6403 ، مُسلم :6842]

④ ये कलिमात पढ़ने वाले पर जन्नत वाज़िब हो जायेगी और क़यामत वाले दिन अल्लाह उसे ख़ुश कर देंगा.
[سُنن ابی داؤد : 5072 ، مُسندِ احمد : 18990] (3 मर्तबा सुबह और शाम)

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا

﴿राज़ी हूँ मैं अल्लाह के रब होने पर, और इस्लाम के दीन होने पर, और **मुहम्मद** ﷺ के नबी होने पर﴾

❺ ये कलिमात पढ़ने वाले को न तो कोई शै नुक्सान पंहुचा सकती है और न ही कोई अचानक नागहानी मुसिबत उसे पहुचेगी (3 मर्तबा सुबह और शाम)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

अल्लाह के नाम के साथ,जिसके नाम के साथ ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ नुक्सान नहीं पंहुचा सकती, और वही सुनने वाला जानने वाला है

[جامع ترمذی : 3388 ، سُنن ابی داؤد : 5088]

❻ ये कलिमात पढ़ने वाले को ज़हरीले जानवर का डंक नुक्सान नहीं पंहुचा सकेगा:

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

मैं अल्लाह के कलिमात ए कामीलह की पनाह पकड़ता हूँ हर उसी चीज़ के शर से जो उसने पैदा की

[مُسلم :6880 ، مُسندِ احمد : 7885 ، 290/2] (3 मर्तबा सुबह और शाम)

❼ ये कलिमात पढ़ने वाले को नमाज़ ए फज्र से ले कर इश्राक़ तक मुसल्सल इबादत करने वाले शक्श से भी ज़्यादा सवाब हासिल होता है: (3 मर्तबा सुबह और शाम)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضٰى نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

[مُسلم : 6913]

अल्लाह पाक़ है और अपनी तारीफ़ के साथ है, अपनी मख्लूक़ की गिनती के बराबर, और अपने नफ्स की रज़ा के बराबर,और अपने अर्श के वज़न के बराबर

नोट: اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ....... दुआ की हदीस की सनद में एक रावी “जाफ़र बिन मैमून” जम्हूर मुहद्दसीन के नज्दीक ज़ईफ़ हैं

[سُنن ابی داؤد : 5090]

❽ ये कलिमात पढ़ने वाले के सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे अगर्चे वह शक्श मैदाने जंग से ही(बुझदिली दिखाकर) भाग चुका हो (3 मर्तबा सुबह और शाम)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

﴾मैं अल्लाह से मग्फिरत तलब करता हूँ, नहीं कोई माबूद मगर वो,खुद से जिंदा, हर चीज़ को कायम रखने वाला है,और मैं उसी की तरफ तौबह करता हूँ﴿

[جا مع ترمذی : 3577 ، سُنن ابی داؤد : 1517]

❾ ये कलिमात जो कोई **नमाज़ ए मग़रिब के बाद गुफ्तुगू करने से पहले** ये कलिमात पढ़ ले और अगर उसी रात फौत हो गया तो दोज़ख की आग से आज़ाद होगा, और जो भी **नमाज़ ए फज्र के बाद गुफ्तुगू से पहले** ये कलिमात पढ़े और उसी दिन उसे मौत आ गई तो दोज़ख की आग से आज़ाद होगा.

(7 मर्तबा नमाज़ ए फज्र और नमाज़ ए मग़रिब के फ़ौरन बाद)

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ

﴾ऐ अल्लाह बचा ले मुझे आग से﴿

[سُنن ابی داؤد : 5079]

﴾रसूलल्लाह ﷺ ये 6 दुआएं मांगते थे :﴾तमाम 1 मर्तबा सुबह और शाम﴿

⑩ اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا (اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا)
وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ)

﴾ऐ अल्लाह! हमने तेरे नाम के साथ सुबह की और तेरे नाम के साथ शाम की (हमने तेरे नाम के साथ शाम की और तेरे नाम के साथ सुबह की) और तेरे ही नाम के साथ हम जिंदा है और तेरे ही नाम के साथ हम मरेंगे और तेरी ही तरफ़ पलटना है(मरकर उठना है)﴿

[جامع ترمذی : 3391]

⑪ اَصْبَحْنَا (اَمْسَيْنَا) عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَعَلٰى كَلِمَةِ
الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا
اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

﴾हमने सुबह की(हमने शाम की)फ़ितरत ए इस्लाम और कलमा
ए इख्लास पर और हमारे नबी ﷺ के दीन और बाप इब्राहीम عليه السلام
यक्सू मुस्लिम की मिल्लत पर और [مُسندِ احمد: 15397،406/3]
वह मुशरिक नहीं थे﴿

⑫ اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ (اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ)
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ، رَبِّ اَسْئَلُكَ خَيْرَ
مَا فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ (هٰذِهِ اللَّيْلَةِ) وَخَيْرَ مَا بَعْدَهٗ (مَا بَعْدَهَا)
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ (هٰذِهِ اللَّيْلَةِ) وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ
(مَا بَعْدَهَا) رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوْٓءِ الْكِبَرِ رَبِّ
اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ [مُسلم : 6908]

﴾हमने सुबह की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की (हमने शाम की और अल्लाह के मुल्क ने शाम की)और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है. नहीं कोई मअबूद मगर अल्लाह, वह अकेला है, नहीं कोई शरीक़ उसका, उसी की बाद्शाही है, और उसी के लिए सब तारीफ़े है, और वो हर शै पर पूरी तरह क़ुदरत रखता है. ऐ मेरे रब्ब! मैं सवाल करता हूँ तुझसे इस दिन(रात)में जो खैर है और जो इसके बाद है. और तेरी पनाह में आता हूँ इस दिन (रात) के शर से और जो शर इसके बाद है. ऐ मेरे रब्ब! तेरी पनाह में आता हूँ सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से. ऐ मेरे रब्ब! तेरी पनाह में आता हूँ आग़ के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से﴿

⑬ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ
وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ [المُستدرك لِلحاكِم : 2000]

﴾ऐ खुद से जिंदा,हर चीज़ को कायम रखने वाले मैं तेरी रहमत के साथ तुझसे मद्द मांगता हूँ. दुरुस्त फरमा दे मेरे तमाम काम मेरे लिए और मुझे पलक झपकने के बराबर भी मेरे नफ्स के हवाले न करना﴿

⑭ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ
اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ
اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَاٰمِنْ رَّوْعَاتِیْ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْۢ بَيْنِ
يَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَّمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ
وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ [سُنن ابی داؤد : 5074]

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ आफ़ियत का दुनिया और आख़िरत में, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ माफ़ी और आफ़ियत का मेरे दीन में और मेरी दुनिया में और मेरे घरवालों में और मेरे माल में. ऐ अल्लाह! पर्दा डाल मेरी छुपी चीजों पर. और अम्न दे मेरी घबराहटो को. ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त फरमा मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दायें से और मेरे बाएँ से और मेरे ऊपर से. और मैं पनाह में आता हूँ तेरी अज़मत की के अचानक नीचें से हलाक कर दिया जाऊं

⑮ اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُ بِكَ
مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ [جامع ترمذی : 3392]

ऐ अल्लाह! जानने वाले गैब और हाज़िर के, पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीनों को, पालने वाले हर शै को और मालिक भी, मैं गवाही देता हूँ की नहीं है कोई मअबूद मगर तू, मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नेफ्स की बुराई से और शैतान के शर से और उसके (मेरे कामों में)शरीक़ होने से)

⑯ **सहीह हदीस:**जो कोई भी सुबह(या दिन)के वक़्त कामिल यक़ीन के साथ سَيِّدُ الْاِسْتِغْفَار पढ़े और शाम से पहले मर जाये तो जन्नती होगा, और अगर शाम को पढ़ ले और सुबह से पहले (1मर्तबा सुबह और शाम) मर मर जाये तो जन्नती होगा

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ
وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ
مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ
بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

﴿ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब्ब है, नहीं है कोई मअबूद मगर तू, तूने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बंदा हूँ और मैं तेरे अह्द और वादे पर (क़ायम)हूँ जिस क़दर मेरी ताक़त है मैं तेरी पनाह में आता हूँ उसके उसके शर से जो मैंने किया, अपने आप पर तेरी नेंमत का इकरार करता हूँ, और अपने गुनाह का ऐतराफ करता हूँ पस मुझे बक्श दे क्यूँकि नहीं है कोई गुनाहों को बक्शने वाला मगर तू﴾ [بُخاری : 6306]

⑰ **सहीह हदीस:** जो कोई ये क़लिमात पढ़ लेगा तो उसके तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिए जायेंगे अगर्चे समुन्द्र के झाग के बराबर हों और कोई भी उससे अमल में बढ़ न सकेगा सिवाये उसके जो इस वज़िफे को ज्यादा मर्तबा पढ़ ले:

(100 मर्तबा सुबह और शाम)

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ

[بُخاری : 6405 ، مُسلم : 6842 ، 6843]

⑱ **सहीह हदीस:** तौबह व इस्तिगफार करना सुन्नत है

(100 मर्तबा दिन भर में)

اَسْتَغْفِرُ اللهَ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

[بُخاری : 6307 ، مُسلم : 6858]

⑲ **सहीह हदीस:** 4 फ़ज़ीलत वाले अज़कार: (तमाम 100 मर्तबा दिन भर में)

✿ سُبْحَانَ اللهِ ﴿100 गुलाम आज़ाद करने का सवाब﴾

✿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﴿100 घोड़े जिहाद में भेजने का सवाब﴾

✿ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ﴿100 ऊँट अल्लाह की राह में कुर्बान करने का सवाब﴾

✿ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ ﴿ज़मीन और आसमान को भर देते है﴾ [السُنن الكُبرىٰ لِلنسائی : 10680]

⑳ **सहीह हदीस:** اللّٰہ جل جلالہ ने रसूलल्लाह ﷺ को जन्नत का ख़ज़ाना अता फ़रमाया

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

[بُخاری : 6409 ، مُسلم : 6862]

﴾नहीं है(गुनाह से बचने की)हिम्मत,और नहीं है(नेकी करने की) ताक़त मगर अल्लाह की तौफीक से﴿

㉑ **सहीह हदीस:** रसूलल्लाह ﷺ ने मुश्किल हालात में और सय्यिदना इब्राहीम علیہ السلام ने आग में डाले जाते वक़्त ये क़लिमात पढ़े:

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

﴾हमने अल्लाह पे भरोसा किया और वही बेहतरीन कारसाज़ है﴿

[آلِ عمران : 173، بُخاری : 4563]

㉒ **सहीह हदीस:** سورۃ اَلْبَقَرَة की आखरी 2 आयात की तिलावत (रात 1 बार)बन्दे के लिए (नफ़ा देने में)काफी हो जाती है

[بُخاری : 4008 ، مُسلم : 1878]

㉓ **सहीह हदीस:** سورۃ اَلْمُلك तिलावत करने वाले शक्स के लिये (रात 1 बार) ये सूरतें सिफ़ारिश करती रहेगी हत्ता की उसकी बक्शीश कर दी जायेगी

[سُنن ابی داؤد : 1400]

㉔ **सहीह हदीस:** **“दरुद शरीफ़”** **पढ़नेवाला** शक्स (10 मर्तबा सुबह और शाम) शाआफ़ी महशर ﷺ की शिफ़ाआत का हक़दार हो जाता है

[مجمعُ الزوائد لِلهیثمی : 17022]

㉕ **सहीह हदीस:** اللّٰہ جل جلالہ की **“हम्द”** और उसके महबूब ﷺ पर **“दरुद शरीफ़”** पढ़ना, हमारी दुआओं की क़ुबुलियत का बेहतरीन ज़रिया है :

[جامع ترمذی : 593]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ ने आयत दरुद (सुरहतुल अहज़ाब, आयत :56) के ज़वाब में नमाज़ वाला **दरुद-ए-इब्राहीमी** علیہ السلام तालीम फ़रमाया था :

[بُخاری : 4797 ، مُسلم : 908]

✿ क़यामत के दिन उंगलियाँ हमारे ज़िक्र की गवाही देंगी:

[سُنن ابی داؤد : 1501]

नोट: सिर्फ दायें हाथ पर शुमार करने की सनद अम्श की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है.

✿ गुठलियों और तस्बीह वगैरह पर इन्फिरादी ज़िक्र करना भी साबित है.

[سُنن ابی داؤد : 1500]

الداعی الی الخیر: نوجوانانِ اھلِسنت ، قرآن وسنت ریسرچ اکیڈمی® بالمقابل صدر تھانہ تحصیل روڈ جہلم
www.AhleSunnatPak.com e-mail: mirza_95@yahoo.com